www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-10* *October 2025***

स्नातक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम': नई शिक्षा नीति, 2020 के सन्दर्भ में

अमर सिंह

सहायक आचार्य, शिक्षा संकाय, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, सिंगरामऊ, जौनपुर, (उ.प्र.),

डॉ0 गौरव राव

आचार्य, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110007

सारांश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में व्यक्तित्व विकास के लिए सुझाए गए आयाम वास्तव में अत्यंत हितकारी हैं। स्नातक स्तर शिक्षा का वह स्तर होता है जहाँ विद्यार्थी अपने कैरियर के प्रति सोंचना शुरू कर देते हैं। आज की शिक्षा का उद्धेश्य व्यक्तित्व विकास के साथ ही जीविकोपार्जन भी है इसलिए शिक्षा के द्वारा बालक को इस तरह से ढाला और परिवर्तित किया जाता है कि वह आने वाले समय में अपने लिए एक अच्छे व्यवसाय का वरण कर सके। यह सब तभी संभव हो सकता है जब इन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को अच्छी तरह से विकसित करने के मार्ग ढूंढ लिए जाएं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में इन विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए काफी प्रयास किये गए हैं। इस नीति में इन विद्यार्थियों के सतत और व्यावसायिक विकास की बात की गयी है जिससे यह विद्यार्थी किसी व्यवसाय को प्राप्त कर सकें। कैरियर प्रबंधन की कल्पना काफी सराहनीय है क्योंकि अगर कैरियर का चुनाव सही तरीके से किया जाता है तब उसे प्राप्त करने में आसानी होती है। शिक्षण संस्थानों में अलगाव की परम्परा काफी विचित्र रूप धारण कर चुकी है जिसे इस नीति में जड़ से समाप्त करने पर बल दिया गया है। इस नीति में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान कराना व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा क्योंकि शिक्षा के प्राथमिक स्तर पर अगर इस समस्या का निराकरण कर लिया जाये तो विद्यार्थियों का विकास आसानी से किया जा सकता है।

मुख्य शब्द– व्यक्तित्व, बहु–विषयक शिक्षा, बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान, कैरियर, आकलन और अलगाव।

प्रस्तावना–

यह प्रकृति का नियम है कि उसने कभी भी सभी प्राणियों को एकसमान नहीं बनाया अर्थात प्रकृति ने हर प्राणी को अपनी एक अलग ही क्षमता और कौशल के साथ जना है। यह असमानताएं न केवल शारीरिक रूप में दिखाई देती हैं बल्कि मानसिक रूप में भी हम सभी मानव एक दूसरे से बहुत भिन्न हैं। प्रकृति के इसी वरदान स्वरुप समाज में अलग–अलग प्रतिभाओं के लोग निवास करते हैं। कोई अन्तर्मुखी स्वभाव का होता है तो कोई बहिर्मुखी, किसी के विचारों में सैद्धान्तिकता होती है तो किसी में सामाजिक गुणों की बहुलता होती है जिसकी वजह से वह अपने समाज में एक सम्मानित और प्रतिष्ठित जीवन जीता है। किसी में बात करने, सोंचने, कार्य करने की इतनी उच्च कौशलयुक्त क्षमता होती है की वह अपने इन्ही गुणों के आधार पर जाना और पहचाना जाता है। कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो केवल कुछ ही समय में मिलकर हमारे मन और विश्वास को जीत लेते हैं और इस तरह वह हमारे सच्चे और प्रिय मित्र बन जाते हैं। कुछ ऐसे भी लोग होते हैं जो निरंतर हमारे साथ रहते हुए भी कभी हमारे मन और मस्तिष्क में अपनेपन का स्थान नही बना पाते और इसलिए उनका होना या न होना हमारे लिए कोई महत्व नही रखता है। उक्त प्रतिभाओं से संपन्न लोगों के साथ ही साथ हम अपने व्यवहारिक जीवन में प्रतिदिन ऐसे लोगों से भी मिलते हैं जो अत्यंत दुखी, समस्याओं से ग्रसित, एकाकी

जीवन और शांत स्वभाव वाले होते हैं। ऐसे लोग अपने जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना नहीं कर पाते और इसी कारण उनका स्वभाव सामान्य लोगों से अलग हो जाता है। यह सच है कि आधुनिक समय में खुशमिजाज लोग सभी को पसंद आते हैं क्योंकि उनमें सभी को प्रभावित करने की एक विशेष योग्यता पाई जाती है लेकिन यह तो प्रकृति की नियम है कि संसार में सभी लोग समान नहीं हो सकते। इन्हीं असमानताओं को हम मनोविज्ञान की भाषा में वैक्तिक भिन्नताएं कहते हैं और इन विभिन्नताओं को मिटाया नही जा सकता है। यह वैक्तित्क भिन्नताएं ही मानव में एक अलग और अनोखे व्यक्तित्व का निर्माण करती हैं जिसके आधार पर वह जीता और पनपता है।

अक्सर देखा जाता है कि ऐसे लोग हमेशा सामाजिक तिरस्कार झेलते रहते हैं जिनका स्वभाव काफी गुस्सैल, दूसरों की निंदा करने वाला, बातूनी और स्वार्थी होता है। समूह अथवा समाज में किसी व्यक्ति विशेष को कोई पद अथवा प्रतिष्ठा केवल उसके मानसिक गुणों के आधार पर नहीं प्राप्त होती वरन उसके शारीरक गठन, सुन्दरता, लम्बाई, मृदु स्वभाव आदि सतही गुणों के आधार पर भी प्राप्त होती है। इस प्रकार किसी व्यक्ति के उसके शारीरिक और मानसिक गुण जो अन्य व्यक्तियों पर सकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं उसका व्यक्तित्व कहे जाते हैं। इस प्रकार व्यक्तित्व का तात्पर्य उन शारीरिक और मानसिक गुणों के समुच्चय से है जो दूसरों पर अपना एक धनात्मक प्रभाव स्थापित करते हैं। किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व ही उसके समूचे व्यवहार करने के तरीके को निश्चित करता है अर्थात व्यक्ति अपने परिवार, मित्र, समूह, विद्यालय में जो भी व्यवहार करता है वे सभी उसके व्यक्तित्व द्वारा नियंत्रित और पोषित होते हैं (व्यक्तित्व और मानव व्यवहार की गतिविधियाँ, अध्यक्ष एल.आर. गुर्जर, पृष्ठ सं.4)। शारीरिक गुणों में किसी व्यक्ति की लम्बाई, रंग, रूप, शारीरिक गठन, चौड़ाई, ध्वनि आदि आते हैं जो उसके व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने में अपनी महती भूमिका निभाते हैं। इसके विपरीत मानसिक गुणों के अंतर्गत ज्ञान, सोंच, स्वभाव, चेतना, इच्छा, भावना, संवेग, संप्रत्यय आदि आते हैं। इस प्रकार यह सभी शारीरिक और मानसिक गुण मिलकर किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। किसी व्यक्ति के इन शारीरिक और मानसिक गुणों का जितना उच्च स्तर तक विकास हो जाता है वह व्यक्ति उतना ही श्रेष्ठ व्यक्तित्व को प्राप्त कर लेता है। व्यक्ति के एक प्रभावशाली व्यक्तित्व के विकास में उसकी रुचियों और अभिवृतियों का बहुत बड़ा योगदान होता है (व्यक्तित्व और मानव व्यवहार की गतिविधियाँ, अध्यक्ष एल.आर. गुर्जर, पृष्ठ सं.4) क्योंकि उसकी रुचियों के आधार पर ही पता चलता है उसका व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली है। व्यक्ति की रुचियों को उसकी पसंद या नापसंद के आधार पर मापा जाता है जैसे कोई व्यक्ति अगर समाज सेवा में रूचि रखता है तो दीन दुखियों की सेवा करना उसका प्राथमिक उद्धेश्य रहेगा। ऐसे व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों को भारतीय समाज में सदा से उच्च समझा जाता रहा है जैसे राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व कुछ इसी प्रकार का था और आज भी उन्हें अपने इसी सेवाभाव के लिए भारतीय समाज याद करता है। इसके विपरीत कुछ लोग असामाजिक कार्यों को करने में रूचि रखते हैं इसलिए इनको समाज घृणा की दृष्टी से देखता है। ऐसे लोग बहुत ही कम व्यक्तियों के प्रिय होते हैं और हर समय सामाजिक उपेक्षा और तिरस्कार झेलते रहते हैं। एक अन्य अध्ययन में पाया गया है कि अभिवृतियाँ व्यक्ति के व्यक्तित्व को परिवर्तित करती हैं (व्यक्तित्व और मानव व्यवहार की गतिविधियाँ, अध्यक्ष एल.आर. गुर्जर, पृष्ठ सं.4)। अभिवृतियाँ, व्यक्ति की किसी वस्तु अथवा मानव के प्रति उसकी स्वयं की बनायी गयीं वह मानसिक दशाएं हैं जिसके आधार पर वह उस वस्तु अथवा मानव को देखता और समझता है। अभिवृतियाँ जन्म से निर्धारित नही होतीं बल्कि इन्हें प्रत्येक मानव अपने वातावरण से सीखता है और साथ ही अलग–अलग क्षेत्रों में व्यक्तियों की अभिवृतियाँ भी अलग–अलग होती हैं जैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक अभिवृतियाँ आदि। अभिवृतियाँ किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के साथ ही साथ उसके स्थायित्व और गतिशीलता पर भी अपना प्रभाव डालती हैं। व्यक्ति की अभिवृत्तियों के साथ ही उसकी विभिन्न प्रकार बौद्धिक क्षमताएं जैसे बुद्धि, अभिक्षमता, संप्रत्यय, सृजनात्मकता, विचार, संवेग, रुचियाँ, मूल्य, नैतिकता, चरित्र, सामाजिकता आदि भी उसके व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं (व्यक्तित्व और मानव व्यवहार की गतिविधियाँ, अध्यक्ष एल.आर. गुर्जर, पृष्ठ सं.4)। किसी व्यक्ति का अच्छा चरित्र उसके प्रभावशाली व्यक्तित्व का अंग होता है और वह तब महान चरित्र का व्यक्ति माना जाता है जब वह अपने वर्तमान सुख और सुविधाओं को महान आदर्श और परोपकारिता के लिए त्याग देता है। इस प्रकार उसके चरित्र के आधार पर ही उसे भारतीय समाज महान व्यक्तित्व की श्रेणी में रखता है।

व्यक्ति अपने जीवन की शुरुआत एक परिवार से करता है और इसके बाद वह किसी समूह अथवा समाज का भी सदस्य बन जाता है और इस तरह इन दोनों समूह में रहकर वह विभिन्न प्रकार के सामाजिक गुणों को सीखता है। यह सामाजिक गुण उसके व्यक्तित्व में विभिन्न सामाजिक गुणों जैसे त्याग, वलिदान, सहानुभूति, सहयोग, जनकल्याण आदि का संचार करते हैं (व्यक्तित्व और मानव व्यवहार की गतिविधियाँ, अध्यक्ष एल.आर. गुर्जर, पृष्ठ सं.4)। आज भी भारतीय समाज अपने उन व्यक्तित्व के धनी लोगों को याद करता है जिनके त्याग और बलिदान से समूचा हिंदुस्तान जाना जाता है। हमारे अमर शहीद जिन्होंने इस देश को आजाद कराने के लिए अपने प्राणों तक की बाजी लगा दी वो आज भी हमारे मन और मस्तिष्क में एक महान व्यक्तित्व के रूप में समाहित हैं।

इस तरह कहा जा सकता है कि मनोशारीरिक गुणों के समुच्चय को व्यक्तित्व कहते हैं जिसमें व्यक्ति का न केवल

शारीरिक गठन शामिल होता है बल्कि उसके मानसिक गुण भी होते हैं।

अध्ययन की आवश्यकता–

व्यक्तित्व व्यक्ति के शारीरिक गठन, लम्बाई, सुन्दरता और मनोवैज्ञानिक व्यवहार के तरीकों जैसे– रुचियों, अभिवृत्तियों, प्रेरणाओं, उद्धेश्यों, योग्यताओं और क्षमताओं आदि के सम्मिलित योग को कहते हैं (व्यक्तित्व और मानव व्यवहार की गतिविधियाँ, अध्यक्ष एल.आर. गुर्जर, पृष्ठ सं.6)। किशोरावस्था से लेकर युवावस्था तक के लोगों में अपने व्यक्तित्व को आकर्षित, प्रभावशाली और आकर्षित बनाने की बहुत ही चाह रहती है क्योंकि यह वह आयु होती जिसमें यह विद्यार्थी अपनी प्रतिभाओं और क्षमताओं को पहचानने लग जाते हैं और इसलिए इन क्षमताओं को और अधिक पोषित करने के लिए प्रयत्नरत भी रहते हैं। स्नातक विद्यार्थी किशोरावस्था के अंतिम पढ़ाव में अथवा युवावस्था में प्रवेश कर चुके होते हैं इसलिए यह अपने व्यक्तित्व को विकसित करने के लिए हमेशा चिंतित रहते हैं। प्राथमिक चिंता तो उनकी यही होती है की वह अपने व्यकित्व को किस तरह से विकसित कर प्रभावशाली बनाये कि उन्हें अपनी क्षमता के हिसाब से रोजगार प्राप्त हो सके। आज का आधुनिक जीवन अनेक प्रतिस्पर्धाओं से भरा होने के कारण इन विद्यार्थियों का पारिवारिक और सामाजिक जीवन अत्यंत जटिल होता जा रहा है। शिक्षा के इस स्तर पर आते–आते यह विद्यार्थी अनुभव करने लग जाते हैं कि केवल शिक्षा ही वह माध्यम है जिसके द्वारा समाज में अपना एक प्रतिष्ठित स्थान बनाया जा सकता है और यह तभी सम्भव है जब शिक्षा से स्वयं का व्यक्तित्व विकसित कर लिया जाये (व्यक्तित्व विकास, मुनि धर्मेश कुमार, पृष्ठ सं. 2)।

व्यक्ति का व्यक्तित्व वह स्तम्भ के समान है जिसके सहारे उसकी अपनी एक जीवन शैली बनती है और यही जीवन शैली उसकी अपनी पहचान। कोई भी व्यक्ति हमारे मन और मस्तिष्क में तब तक नहीं उतरता जब तक उसके व्यक्तित्व गुण हमारे अंतर्मन को नहीं छू लेते। अगर उसका व्यक्तित्व व्यवहार हमें प्रभावित करता है तब उससे हम बार–बार मिलना चाहते हैं, उससे बात करना चाहते हैं और उससे मित्रता करना चाहते हैं। यही आकर्षण किसी व्यक्ति का एक प्रभावशाली व्यक्तित्व कहा जाता है। इस तरह समझ सकते हैं कि एक प्रभावशाली व्यक्तित्व कितना आवश्यक है क्योंकि इसकी मदत से वह न केवल खुशनुमा जीवन जीता है बल्कि अपने समाज, मित्र और रिश्तेदारों में अपनी एक विशेष पहचान भी बनाता है। शिक्षा के सभी स्तरों में स्नातक स्तर शिक्षा का वह स्तर होता है जहां बालक अपनी विद्यालयी शिक्षा पूर्ण करके किसी महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय में प्रवेश लेता है। किशोरावस्था के अंतिम पढ़ाव पर होता है और धीरे–धीरे उसके व्यवहार, इच्छाएं, संवेग, रुचियां स्थायी रूप लेने लगती हैं इसलिए इस स्तर पर आकर यह विद्याथी अपने लिए एक व्यवसाय का अनुभव भी करने लगते हैं। इस तरह इस अध्ययन की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि एक अच्छा और प्रभावशाली व्यक्तित्व ही सफलता का अच्छा माध्यम है और इसको विकसित किये बिना कुछ भी प्राप्त करना असम्भव होगा।

व्यक्तित्व की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि–

प्राचीन काल से ही व्यक्तित्व को जानने के लिए पूर्वी और पश्चिमी देशों में लगातार प्रयास किये जाते रहे हैं। पूर्वी देश भारत में व्यक्तित्व को सर्वप्रथम दर्शन के क्षेत्र में जैसे– वेद, उपनिषद, सांख्य दर्शन, योग दर्शन, बौद्ध दर्शन के दृष्टिकोण से जाना और समझा गया था। उस समय इन दर्शनों के अंतर्गत व्यक्तित्व को आत्मा के रूप में जाना जाता था (प्रेक्षाध्यानः व्यक्तित्व विकास, मुनि धर्मेश कुमार, पृष्ठ सं. 3)। व्यक्तित्व की यह प्राचीन अवधारणा आधुनिक मनोविज्ञान के व्यक्तित्व से भिन्न थी क्योंकि वर्तमान व्यवहारिक मनोविज्ञान व्यक्तित्व को शारीरिक एवं मानसिक गुणों का योग मानता है। अस्तु भारतीय दर्शनों में व्यक्तित्व को नैतिक एवं आध्यात्मिक गुणों के आधार पर स्वीकार किया गया। इन सभी दर्शनों में कहा गया की मनुष्य न केवल एक शरीर है बल्कि उसके अन्दर एक दिव्य आत्मा का निवास है। इस वक्तव्य से व्यक्तित्व का आध्यात्मिक स्वरुप उजागर होता है। इन दर्शनों में माना गया कि व्यक्तित्व का अनुमान मनुष्य के केवल शारीरिक, मानसिक और भावात्मक गुणों के आधार पर ही नही लगाया जा सकता है बल्कि इसके लिए समग्रवादी दृष्टि अधिक उपयोगी है। इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्नलिखित हैं–

• पूर्वी भारतीय दर्शनों में व्यक्तित्व के जो सिद्धांत दिए गए हैं उनमें व्यक्तित्व को अन्तर्दर्शन, पूजा–पाठ, साधना, मनन, योग–विद्या एवं आत्मसिद्धि के आधार पर समझने का प्रयास किया गया है (प्रेक्षाध्यान रू व्यक्तित्व विकास, मुनि धर्मेश कुमार, पृष्ठ सं. 4)।

• दर्शन के सिद्धांतों में यह विश्वास जताया गया कि व्यक्ति अपने कठिन परिश्रम और योग साधना से स्वयं को एक आदर्श व्यक्तित्व में बदल सकता है।

पश्चिमी देशो में जो व्यक्तित्व के क्षेत्र में कार्य हुआ है उसका इतिहास भी पुराना रहा है। इसकी उत्पत्ति के क्षेत्र में कार्य करने वालों में परम्परागत और ग्रीक दार्शनिक हिप्पोक्रेट्स, प्लेटो एवं अरस्तु आदि हैं। इन्होंने व्यक्तित्व को जानने के लिए मानव स्वभाव और उसके व्यवहारों का अध्ययन किया। आज भी इन सिद्धांतों ने अपना अस्तित्व खोया नही है बल्कि आधुनिक व्यक्तित्व सिद्धांतों में इन परम्परागत और पौराणिक सिद्धांतों के विचारों का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है।

व्यक्तित्व को और अच्छी तरह से समझने के लिए इसके निर्धारक तत्त्वों को समझना बहुत आवश्यक हो जाता है क्योंकि इनके बिना व्यक्तित्व की अवधारणा अधूरी रह जाएगी।

व्यक्तित्व के निर्धारक तत्व–

जैविक या दैहिक निर्धारक तत्त्व–

यह वे कारक हैं जो अनुवांशिकता होते हैं और यह कारक व्यक्ति के जन्म से पूर्व अर्थात उसके गर्भधारण के समय से लेकर सम्पूर्ण जीवन तक व्यक्तित्व को प्रभावित करते रहते हैं। इन निर्धारकों में निम्नलिखित कारक हैं जो इस प्रकार हैं–

आनुवंशिकता–

व्यक्ति की शारीरिक संरचना को स्वरुप देने वाले कारक जैसे कद, रूप, रंग, शारीरिक गठन आदि पर अनुवांशिकता का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। अतरू लम्बे माता–पिता की संताने लम्बी और गंठे माता–पिता की संताने भी गंठी होती हैं। यह अनुवांशिकता का ही प्रभाव है कि संताने इन आंतरिक गुणों को अपने पूर्वजों से गृहण करती हैं।

शारीरिक गठन–

अरस्तु ने सच ही कहा था कि 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का निवास है'। शरीर का स्वस्थ होना न केवल हमारे बौद्धिक स्तर के लिए आवश्यक है बल्कि शारीरिक क्रियायों को संपन्न करने के लिए भी हमारा शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना बहुत आवश्यक है। कहते हैं कि स्वास्थ ही सबसे बड़ा धन है और जिसके पास यह होता है वह व्यक्ति सबसे बड़ा धनवान होता है। सुन्दर काया और हष्ट–पुष्ट शरीर न केवल व्यक्ति को आकर्षक बनाता है बल्कि उसके अन्दर एक बड़ा आत्मविश्वास भी पैदा करता है। यह आत्मविश्वास उसके समायोजन स्तर को उच्च स्तर तक ले जाने में मदत करता है। विभिन्न अध्ययनों से यह साबित हो चुका है कि जो व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ होते हैं उनका समायोजन स्तर सामान्य लोगों से बहुत उच्च होता है (प्रेक्षाध्यान रू व्यक्तित्व विकास, मुनि धर्मेश कुमार, पृष्ठ सं. 14)। इस प्रकार व्यक्तियों की यह काया ही उनका व्यक्तित्व होती है। क्रेश्मर और शैल्डन नामक दो मनोवैज्ञानिक हुए थे जिन्होंने शारीरिक रचना और गठन के आधार पर व्यक्तित्व को विभाजित किया। इनके अनुसार जो लम्बे व्यक्ति होते हैं उन्हें लम्बकाय व्यक्तित्व वाला कहा जाता है। जो शारीरिक रूप से काफी गोल–मटोल दिखते हैं उन्हें गोलकाय वाला व्यकित्व कहा जाता है। इसी प्रकार इन दोनों ने अन्य कई प्रकार के व्यक्तित्व प्रकार बताये।

शारीरिक रसायन–

मानव शरीर में समय–समय पर होने वाले बदलाव जैसे शरीर की समस्थिति, नाड़ी तंत्र की क्रियाएं आदि मानव के शरीर, मन एवं भावनाओं पर असीमित प्रभाव पड़ता है (प्रेक्षाध्यान रू व्यक्तित्व विकास, मुनि धर्मेश कुमार, पृष्ठ सं. 14) उदारणार्थ यदि मनुष्य की पाचन प्रणाली ठीक नही है तो वह हमेशा सुस्त, थका हुआ, उदास दिखाई देगा द्य

नाड़ी संस्थान–

व्यक्ति के जीवन में नाड़ी संस्थान का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान होता है। वह व्यक्ति जिसका नाड़ी संस्थान अथवा स्नायुमण्डल काफी विकसित होता है उसकी बुद्धि भी तेज होती है और इस प्रकार उस व्यक्ति में समायोजन का स्तर भी काफी उच्च होता है। जिन व्यक्तियों का नाड़ी संस्थान कम विकसित होता है उनमें बुद्धि का निम्न स्तर पाया जाता है और उनकी समायोजन क्षमता भी काफी कमजोर होती है। नाड़ी संस्थान तीन प्रकार के होते हैं दृ केन्द्रीय नाड़ी संस्थान, स्वचालित नाड़ी संस्थान और सीमांत नाड़ी संस्थान। केन्द्रीय नाड़ी संस्थान में जो मस्तिष्क स्थित होता है उसका कार्य ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों को संचालित और नियंत्रित करना होता है। स्वचालित नाड़ी संस्थान व्यक्ति के व्यक्तित्व को काफी प्रभावित करता है। इसके सामान्यता दो भाग होते हैं पहला अनुकम्पी और दूसरा परानुकम्पी। अनुकम्पी स्वचालित नाड़ी संस्थान व्यक्ति की उपस्थित शक्तियों को संचालित करती है। परानुकम्पी व्यक्ति के उत्तेजित स्वभाव को शांत करती है। सीमांत नाड़ी संस्थान के भी दो भाग होते हैं –ज्ञानवाही और क्रियावाही। ज्ञानवाही नाड़ी संस्थान का कार्य वातावरणजन्य और शरीर की सूचनाओं को मस्तिष्क तक पहुँचाना होता है। क्रियावाही नाड़ी संस्थान का कार्य मस्तिष्क द्वारा लिए गए निर्णयों को शरीर के अन्य अंगों तक पहुँचाना है।

इसके आलावा अंतरूस्रावी ग्रंथियां, स्वास्थ, सांस्कृतिक निर्धारक, पारिवारिक निर्धारक, शैक्षिक निर्धारक, शिक्षक, सहपाठियों और शिक्षण संस्थान का प्रभाव एक अच्छे और प्रभावशाली व्यक्तित्व को बनाने में काफी होता है।

वातावरणजन्य कारक–

वातावरण एक ऐसा कारक है जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने का कार्य करता है। अक्सर कहा जाता है कि जैसी संगत वैसी रंगत अर्थात जैसे लोगों के साथ हमारा मेलझोल होगा हम भी वैसे ही बन जायेंगे। अगर अच्छे और संस्कारी विचारों वाले लोगों की हम संगत करेंगे तब उनके यही विचार हमारे मन और मस्तिष्क

पटल पर समा जायेंगे और हम भी अच्छे और संस्कारी कार्यों को करना अपना परम दायित्व समझने लग जायेंगे। यदि हम गलत, क्रूर और अत्याचारी लोगों से मित्रता करेंगे तब निश्चित ही हमारा व्यक्तित्व भी कुछ वैसा ही बन जायेगा। इस तरह वातावरण व्यक्तित्व को प्रभावित करने का एक बड़ा कारक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में व्यक्तित्व विकास के लिए सुझाए गए आयाम–

सतत और व्यवसायिक विकास–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में स्नातक विद्यार्थियों के सतत और व्यवसायिक विकास की बात की गयी है। इस नीति में कहा गया है कि शिक्षा ऐसी हो जो बिना भेदभाव के सभी को आगे बढ़ने के समान अधिकार दिलाए और साथ ही विद्यार्थियों को उस दिशा में तैयार करे जिससे वह जीवन में आने वाली हर समस्या का समाधान कर सकें। आज इस वैज्ञानिक और उदारीकरण के युग में जीवन का अंतिम उद्धेश्य आत्मा और परमात्मा को जानना न होकर किसी जीविका को प्राप्त करना हो गया है। प्राचीन समय की शिक्षा के उद्धेश्यों से आज की शिक्षा के उद्धेश्य बहुत भिन्न हैं इसलिए इस नीति में शिक्षा द्वारा विद्यार्थियों के व्यवसायिक विकास की बात की गयी है। इस नीति के माध्यम से शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो विद्यार्थियों को किसी जीविका प्राप्ति के लायक बना सके अर्थात इसे प्राप्त करने के बाद उसे व्यवसाय के लिए भटकना न पड़े। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थियों में विभिन्न कौशलों और क्षमताओं को विकसित करने की बात की गयी है जिससे वह अपना और अपने परिवार का भरण–पोषण कर सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम

कैरियर प्रबंधन–

इस नीति के माध्यम से विद्यार्थियों को बौद्धिक रूप मजबूत करने की बात की गयी है जिससे विद्यार्थी अपने लिए एक उपयुक्त कैरियर का चुनाव कर सकें और उसे प्राप्त करने के लिए उस दिशा में आगे बढ़ सकें। अक्सर विद्यार्थी अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार कैरियर का चुनाव नहीं करते और इस प्रकार उसे प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं। इस नीति में इसके कारणों की व्यापक खोज करने पर विशेष बल दिया गया है और इस बात पर बल दिया गया है शिक्षकों को इस प्रयास के लिए आगे आना होगा जिससे विद्यार्थी अपने लिए एक उचित और योग्यतानुसार कैरियर का चुनाव कर सकें। निश्चित ही यदि यह विद्यार्थी अपने लिए एक उचित कैरियर का चुनाव करने और उसके प्रबंधन में सफल होते हैं तो पर्याप्त रूप में मानव संसाधन का विकास होगा और न केवल मानव संसाधन का विकास होगा बल्कि हम पर्याप्त रूप में एक प्रभावशाली और आकर्षित मानव व्यक्तित्व को प्राप्त कर पाएंगे। इस प्रकार वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के माध्यम से कैरियर प्रबंधन द्वारा एक अच्छे और प्रभावित व्यक्तित्व को प्राप्त करने की कल्पना की गयी है।

वैज्ञानिक आकलन की विधियाँ–

वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में विद्यार्थियों के शारीरिक और मानसिक मापन एवं मूल्यांकन के लिए परम्परागत आकलन की विधियों को अविश्वसनीय और अवैद्य मानते हुए वैज्ञानिक आकलन की विधियों के प्रयोग की बात की गई है। इस प्रकार यदि विश्वसनीय आकलन की विधियों के माध्यम से मानव व्यक्तित्व का आकलन होगा तो निश्चित ही विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को विकसित करने के असीमित मार्ग खुलेंगे।

बहु–विषयक शिक्षा–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में विषय वर्ग की परिपाटी को ख़त्म करने की बात की गयी है। इस नीति के माध्यम से अब विद्यार्थी न केवल अपने प्रमुख विषय को पढ़ेगा बल्कि अन्य विषयों को गौण विषयों के रूप में भी पढ़ सकेगा। इन विभिन्न विषय वर्ग को पढ़ने से विद्यार्थियों का व्यक्तित्व पहले से अधिक बहुआयामी बनेगा जिससे उनकी सोंच में पहले से अधिक व्यापकता आएगी। आज हम 21वीं शदी में जी रहे हैं जहाँ वैज्ञानिक और उदारीकरण का युग है जहाँ मानव को पहले से अधिक रचनात्मक, क्रियाशील, वैज्ञानिक, खोजकर्ता, अनुभवी, प्रयोगकर्ता आदि होने की अपेक्षा की जाती है। आज के मानव में यदि इन विशेषताओं का समावेश नहीं है तो वह एक सफल व्यक्ति का जीवन नहीं जी सकता और हर परिस्थिति में समस्यायों से लड़ता रहेगा अर्थात एक परेशान मानव का जीवन जियेगा। इस प्रकार इस नीति के माध्यम से शिक्षा को बहु–विषयक बनाकर मानव व्यक्तित्व को अधिक प्रभावशाली बनाने की बात की गयी है।

अलगाव की समाप्ति–

आज वर्तमान समय में शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर अलगाव की समस्या एक विकराल रूप लेती जा रही है। प्राथमिक शिक्षकों का माध्यमिक शिक्षा के लिए, माध्यमिक शिक्षकों का उच्च शिक्षा के लिए और उच्च शिक्षकों का अपने से निम्न स्तर की शिक्षा के लिए किसी प्रकार का कोई योगदान देखने को नहीं मिलता। यह योगदान न तो प्रशासनिक स्तर पर, न तो प्रबंध स्तर पर और न ही शैक्षणिक और सह–शैक्षणिक स्तर कर देखने को मिलता है। यह अलगाव न केवल शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर बल्कि एक ही स्तर की शिक्षण संस्थानों में भी देखने को मिलता है जैसे विश्वविद्यालय स्तर पर

विज्ञान संकाय के सदस्यों का हमेशा ऐसा मानना रहा है कि योग्यता और अनुभव के मामले में कला संकाय के सदस्यों से वे श्रेष्ठ हैं। इस समस्या के समाधान के लिए सर्वप्रथम भारतीय शिक्षा आयोग अर्थात कोठारी आयोग ने बहुत सी संस्तुतियां दी थीं लेकिन इसमें सुधार की अपेक्षा आज भी कम महसूस नहीं की जाती इसलिए रा.शि.नी., 2020 में भी इसके समाधान की संस्तुतियां दी गयी हैं। स्नातक विद्यार्थियों का व्यक्तित्व तभी विकसित किया जा सकता है जब प्राध्यापकगण अलगाव से वंचित हों। इस नीति के माध्यम से इस अलगाव को समाप्त करने का पूरा प्रयास करने की बात की गयी है।

बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान कराना–

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में कक्षा 3 तक पहुँचते–पहुँचते बालक से यह अपेक्षा की गयी है कि उसे कम–से–कम लिखना–पढ़ना और अंकगणित का ज्ञान आ जाना चाहिए। विभिन्न सर्वेक्षणों के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि इस स्तर पर आकर बालक लिखना, पढ़ना और आंकिक ज्ञान नहीं सीख पाता इसलिए इस नीति में इस भयाभय परिस्थिति से निपटने का प्रयास किया गया है। इस नीति में माना गया है कि यदि बालक इस स्तर पर आकर इस ज्ञान को नहीं सीख पाता तो उससे एक अच्छे व्यक्तित्व विकास की कल्पना करना व्यर्थ है इसलिए बालक के व्यक्तित्व का विकास तभी किया जा सकता है जब हम शिक्षा द्वारा उसकी नींब मजबूत कर लें। यह सच है कि बालक की समूची शिक्षा का आधार प्राथमिक शिक्षा होती है। बालक के विकास का मार्ग प्राथमिक शिक्षा ही निर्धारित करती है इसलिए इसमें निरंतर सुधार के प्रयास किये जाते रहने चाहिए। इस शिक्षा में धनात्मक सुधार के लिए समय–समय पर विभिन्न आयोग/समितियों/घोषणापत्रों और शिक्षा नीतियों का एलान होता रहा है लेकिन अपेक्षित सुधार नहीं हो सका। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 द्वारा इस शिक्षा में सुधार के अनेकों प्रयास किये गए हैं। बुनियादी साक्षरता और संख्याज्ञान कराना निश्चित ही बालकों के व्यक्तित्व विकास में एक नींब का पत्थर साबित होगा जिससे एक अच्छे व्यक्तित्व का विकास करना सम्भव हो पाएगा।

मूल्यांकन–

यह सृष्टि को बने हुए करोड़ों और अरबों वर्ष हो गए हैं और जब से मानव इस सृष्टि पर अवतरित हुआ है तब से लेकर आज तक वह स्वयं को निरंतर बेहतर से बेहतर बनाने के प्रयास में लगा रहा है। उसके आदिमानव समाज से लेकर आज वर्तमान आधुनिक समाज तक के सफ़र से यही पता चलता है कि उसने स्वयं को विकसित करने के लगातार असीमित प्रयास किये हैं। यह उसके ही प्रयासों के फलस्वरूप संभव हो पाया है कि आज विज्ञान का दौर है। विज्ञान के विकास से हर क्षेत्र में तेज़ी से बदलाव हो रहे हैं। विज्ञान के विकास ने आज हमारे लिए बौद्धिक स्तर पर कार्य करने के लिए इतने रास्ते खोल दिए हैं कि आज हम अपनी समस्यायों के समाधान के लिए तुरंत विज्ञान के सहयोग से एक उचित समाधान ढूंढ निकालते हैं। विज्ञान ने हर क्षेत्र में विकास के असीमित मार्ग खोल दिए हैं। विज्ञान की अपार तरक्की में केवल मानव का हाथ है और जिस प्रकार से विज्ञान ने अपना विस्तार किया है उससे यही अनुमान लगता है कि मानव ने आज अपना व्यक्तित्व कितना प्रभावशाली रूप में विकसित कर लिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए जो आयाम सुझाए गए हैं वह वह बहुत ही सराहनीय हैं। निश्चित ही स्नातक स्तर के विद्यार्थियों का व्यक्तित्व पहले से अधिक प्रभावशाली और आकर्षित बनेगा ऐसी अपेक्षा की गयी है इस नीति में।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

वेबसाइट सन्दर्भ सूची–

- https:/www.education.gov.in
- https:/www.eoibucharest.gov.in
- https://www.drishtiias.com
- https://www.cbseacademic.nic.in

- https://en.wikipedia.org
- https://www.census2011.co.in

Cite this Article

'अमर सिंह, डॉ0 गौरव राव', "स्नातक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के विविध आयाम': नई शिक्षा नीति, 2020 के सन्दर्भ में", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:10, October 2025.

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i100005

Published Date- 03 October 2025